7

सामाजिक–सांस्कृतिक विकास

बच्चों! आपने अपने गाँव या मोहल्ले में भिन्न–भिन्न जाति, धर्म या सम्प्रदाय के लोगों को एक साथ रहते हुए देखा होगा। क्या आप बता सकते हैं कि उनके खान–पान, रहन–सहन, सोच–समझ के स्तर पर कौन–कौन सी समानताएँ एवं असमानताएँ हैं? आपको यह जानने का प्रयास जरूर करना चाहिए कि ये अलग–अलग जाति एवं धर्म के होते हुए भी इतने करीब कैसे आए?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

विभिन्न धर्मों के समानताओं एवं असमानताओं को चार्ट के माध्यम से बताएँ।		
धर्मों के नाम		समानता
असमानता		

इस्लाम का भारतीय संस्कृति से मेल–जोल

भारत में प्राचीनकाल से ही सांस्कृतिक मेल–जोल की समृद्ध परम्परा रही है। जैसा कि आप वर्ग 6 में पढ़ चुके हैं। यहाँ प्राचीन काल में आर्यों, शकों, कुषाणों एवं हूणों आदि का आगमन हुआ। वे सभी बाहरी देशों से भारत आए और यहाँ के रीति रिवाजों

को स्वीकार कर यहीं के होकर रह गए।

मध्यकाल में भारत में आकर बसने वाला सबसे महत्वपूर्ण वर्ग मुसलमानों का था। इस्लाम धर्म का अभ्युदय अरब प्रायद्वीप में सातवीं सदी में हुआ। इसके पूर्व भी अरबों का भारत के तटवर्ती क्षेत्रों के साथ व्यापरिक संपर्क था, जो मुस्लिम अरबों के साथ भी बना रहा। आठवीं शताब्दी के आरंभ में मुहम्मद–बिन–कासिम के नेतृत्व में सिंध एवं दक्षिण पश्चिमी पंजाब में अरबों का शासन स्थापित हुआ, किन्तु अरबों का राजनीतिक वर्चस्व सीमित क्षेत्रों में और अल्पकाल तक ही रहा। ग्यारहवीं शताब्दी में गजनी के शासक महमूद द्वारा पश्चिमोत्तर सीमांत के रास्ते सैनिक अभियान की श्रृंखला आरंभ की गई। इन अभियानों का मुख्य उद्देश्य भारत का धन लूटना था। परन्तु इनका एक परोक्ष परिणाम यह हुआ कि पंजाब के क्षेत्र में तुर्कों की सत्ता स्थापित हुई और लाहौर का नगर उनकी राजधानी बनी। राजनीतिक नियंत्रण का और अधिक विस्तार 12 वीं सदी के अंत तक हुआ जब मुहम्मद गोरी ने दिल्ली और अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर अपना राजनीतिक प्रभुत्व उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में स्थापित किया। 13वीं सदी के आरंभ में पंजाब, सिंध, राजपुताना के कुछ क्षेत्र एवं दोआब के मुख्य भाग तक मुस्लिम शासकों का नियंत्रण स्थापित हो चुका था।

1206 में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। इसी अवधि, अर्थात 8वीं से 12वीं सदी, में इस्लामी जगत के साथ भारत के संबंध बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर बने। महमूद के समकालीन मध्य एशियाई विद्वान अलबेरूनी ने हिन्दुओं के धर्म, विज्ञान और सामाजिक जीवन से संबंधित अपनी सुप्रसिद्ध रचना ''किताब–उल–हिन्द'' लिखी। दूसरी ओर अनेक सूफी संत एवं धर्म प्रचारक भी भारत के विभिन्न नगरों में आकर बसे जिनके माध्यम से भारतीय जन साधारण को इस्लाम धर्म के उद्देश्यों और विशेषताओं की जानकारी मिली। इनमें एकेश्वरवाद, समानता और बन्धुत्व जैसे सिद्धान्तों ने भारत के उन वर्गों को विशेष रूप से प्रभावित किया जो सामाजिक भेदभाव और उत्पीड़न का शिकार हुए थे। अतः इन दोनों धर्मों के माननेवालों के बीच पारस्परिक आदान–प्रदान और समन्वय का वातावरण बना।

तेरहवीं सदी में तुर्क–शासन की स्थापना के बाद तुर्कों ने भारत के बड़े क्षेत्रों पर

अपना नियंत्रण स्थापित किया। संपूर्ण उत्तर भारत के साथ–साथ दक्षिण भारत को भी जीतने का प्रयास उनके द्वारा किया गया। इन्होंने अपने विजयों एवं सैन्य अभियानों से भारत में राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया।

मुस्लिम शासकों द्वारा भारत में स्थापित राजनीतिक एकता का सबसे बड़ा प्रभाव हिन्दू भक्ति संतों एवं सूफी संतों पर पड़ा। इनलोगों के द्वारा बिना किसी रुकावट के पूरे भारत में अपने विचारों को फैलाया गया। इन पर एक दूसरे के विचारों का प्रभाव भी देखने को मिलता है। जैसा कि आप इसी अध्याय में आगे देखेंगे।

तुर्क सत्ता की स्थापना के साथ ही इस्लाम मानने वाले इरानी, अफगानिस्तानी, खुरासानी लोग भी भारत में बड़ी संख्या में आकर बसे। इनलोगों ने मंगोलों के भय से भारत की ओर अपना रुख किया।

तुर्क के राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना के तीन–चार सौ साल बाद मुगल काल में अकबर द्वारा अपनाई गई उदार धार्मिक नीतियों ने हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे के करीब लाने का उचित माहौल प्रदान किया। हालांकि इन नीतियों को बाद के शासकों ने पूर्णतः नहीं अपनाया।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

क्या आप जानते हैं?

बिहार में तुर्कों की सत्ता के पहले ही सूफियों का आगमन हो चुका था। मनेर में आकर बसने वाले इमाम ताजफकीह बिहार के पहले सूफी संत थे। इनके अतिरिक्त हाजीपुर, बिहारशरीफ, फुलवारीशरीफ, अरवल, मनोरा (ओबरा), आदि जगहों पर अनेक सूफी संतों ने अपनी खनकाह की स्थापना की जिसे आज भी आप किसी न किसी रूप में देख सकते हैं।

भारतीयों और इस्लाम के मानने वालों के बीच आपसी मेलजोल से इस्लामी रीति–रिवाज, धर्म, शिल्प, पहनावा और पकवान आदि को भी भारतीयों ने अपनाया।

आप कुर्ता–पायजामा, सलवार–कमीज, अचकन, लुंगी आदि लोगों को पहनते देखे होंगे। इनके आने के पहले भारतीय सिर्फ धोती या साड़ी ही पहनते होंगे। इस्लाम के अनुयायी हलवा और समोसा जैसे स्वादिष्ट व्यंजन भी अपने साथ लेकर आए। इस्लामी कारीगरों ने भवन निर्माण के कुछ नए तरीकों को भी लाया जिसे आप पांचवें अध्याय में विस्तार से देख चुके हैं।

भारत में मुसलमानों के आगमन के पूर्व लेखन–कार्य पत्तों, पेड़ की छालों, रेशमी कपड़ों, पत्थरों एवं धातु की चादरों पर किया जाता था। अरबों के द्वारा ही यहाँ कागज बनाने की तकनीक लाई गई और कागज पर लिखने का काम शुरू किया गया। जबकि अरबों ने भी इसे चीनियों से सीखा था।

मुस्लमानों के आगमन के कारण भारत में फारसी एवं अरबी भाषा का महत्व बढ़ा। राज–काज की भाषा के रूप में फारसी का इस्तेमाल होने लगा। फलतः हिन्दू जनता ने भी अरबी–फारसी को सीखना प्रारंभ कर दिया। भारतीय दर्शन, ज्योतिष, एवं गणित की अनेक पुस्तकों का अरबी–फारसी में अनुवाद किया गया। मुस्लिम विद्वानों द्वारा हिन्दी में भी कई काव्य रचे गए। अमीर खुसरो जैसे विद्वान ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फारसी, तुर्की, ब्रज और खड़ी बोली के मिश्रण से एक नई भाषा उर्दू का जन्म हुआ। इस तरह उर्दू भारतीय और इस्लामी संस्कृति के समन्वय का सही प्रतीक बनी।

भारत में इस्लाम के आगमन के पहले तकली से सूत काता जाता था जिसमें काफी समय लगता था लेकिन मुसलमान अपने साथ चरखा लेकर आए, जिससे वस्त्र के निर्माण में बहुत सहूलियत हुई।

आप बता सकते हैं कि इस्लाम धर्म अपने साथ खाने–पीने और पहनने की कौन–कौन सी चीजें साथ लेकर आया?

कुछ भारतीयों के द्वारा इस्लाम धर्म को अपनाने से भी परिस्थितियाँ बदलने लगीं। भव्य मंदिरों की तरह सुन्दर–सुन्दर मस्जिदें भी बननी प्रारंभ हुईं। पूजा–अर्चना करने वालों के साथ–साथ नमाज पढ़ने और रोजा रखने वालों की भी संख्या बढ़ी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इस्लाम के मानने वालों ने भी हिन्दू समाज के रीति–रिवाजों एवं रस्मों को अपनाया। जिनलोगों ने धर्म–परिवर्तन के बाद इस्लाम को अपनाया, उनके रहन–सहन एवं पारम्परिक कार्यो में हिन्दू धर्म की कई विशेषताएँ मौजूद थीं। जन्म–मृत्यु, शादी–विवाह आदि के अवसर पर मनाए जाने वाले उत्सव हिन्दू रीति–रिवाज से प्रभावित थे। सूफी संतों के मजार पर जियारत एवं उर्स का मेला हिन्दूओं के तीर्थस्थलों पर होने वाले उत्सव से प्रभावित थे। जिस तरह से हिन्दू अपने देवी–देवताओं की धरती पर पूजा अर्चना हेतु जाते थे अब मुसलमान एवं अन्य समुदाय के लोग भी सूफियों के मजारों पर चादर चढ़ाने जाने लगे।

आप अपने शिक्षक या माता–पिता की सहायता से पाँच–पाँच हिन्दू देवी–देवताओं, सूफी एवं भक्ति संतों से जुड़े स्थलों की सूची बनइए।

क्रमांक	हिन्दू		मध्यकालीन	
	देवी	देवता	सूफी संत	भक्ति संत
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इसे भी जानें

इस्लाम धर्म का जाति–पाति में विश्वास नहीं था फिर भी हिन्दू धर्म से इस्लाम धर्म अपनाने वाले उच्च जाति के लोगों को अशराफ और निम्न जाति के लोगों को अजलाफ कहा जाता था। धीरे–धीरे मुसलमानों के बीच भी जातीय विभाजन शेख, सैयद, मलिक,पैठान, अंसारी, जुलाहा आदि के रूप में होने लगा। इस तरह हिन्दू और मुसलमानों के बीच पारस्परिक मिलन से एक सामाजिक संस्कृति का

विकास हुआ।

भक्ति आन्दोलन

अभिनव अपने दादाजी के साथ गाँव के मंदिर में आयोजित भजन–कीर्तन में शामिल होने गया हुआ था। वहाँ भजन–कीर्तन में शामिल लोगों को देखकर वह अपने दादा जी से पूछता है कि भगवान के प्रति भक्ति की यह परम्परा कब से शुरू हुई? दादा जी उसकी भावनाओं को समझकर बताते हैं कि भारत में बहुत पहले यह भक्ति संतों के द्वारा शुरू की गई।

ईश्वर के प्रति भक्ति के संबंध में जानने की अभिनव की जिज्ञासा और बढ़ती गई जिसे उसके शिक्षक ने शान्त करने का प्रयास किया।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED
WEBCOPY

भक्ति से आप क्या समझते हैं

भक्ति का अर्थ ईश्वर पर पूर्णतः भरोसा एवं उनपर विश्वास करना है। उन्हें ही संसार का कर्ता–धर्ता मानकर खुद को उनकी शरण में समर्पित करना है।

ईश्वरीय अनुराग की परम्परा

भारत में भक्ति या ईश्वर के प्रति अनुराग की परम्परा प्राचीन काल से ही चलती आ रही है। जब बड़े–बड़े राज्यों का उदय नहीं हुआ था और समाज कबीलों में विभक्त

था, हर कबीले के लोग अपने—अपने देवी—देवताओं की आराधना किया करते थे। जैसा कि आप वर्ग 6 की कक्षा में नए प्रश्न, नए विचार के अन्तर्गत पुनर्जन्म एवं परमेश्वर (सर्वशक्तिमान ईश्वर) के प्रति भक्ति भाव के बारे में पढ़ चुके हैं। भक्ति के प्रति श्रीमद्भागवत में यह विचार उल्लिखित है कि मुनष्य भक्तिभाव से परमेश्वर की शरण में जाकर पुनर्जन्म के झंझट से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यह विचार प्रारंभिक सदी में लोकप्रिय हो चुका था। लोग अपने—अपने आराध्य देवी—देवताओं की भक्ति करते थे। शिव, दुर्गा, विष्णु आदि की आराधना करने वाले लोगों के विचार पौराणिक कथाओं के अंग बनते गये। पुराणों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि भक्त भले ही किसी जाति का हो, वह सच्ची भक्ति से ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है। भक्ति की इस विचारधारा ने हिन्दू धर्मावलंबियों के साथ—साथ बौद्ध एवं जैन मतावलम्बियों को भी प्रभावित किया।

आप पिछली कक्षा में पढ़ चुके हैं कि भक्ति की शुरुआत मातृदेवी एवं शिव की पूजा के साथ हड़प्पा सभ्यता से ही शुरू हो जाती है जबकि भक्ति की विचारधारा वैदिक काल से शुरू होती है। वेदों एवं उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा के बीच सीधा संबंध स्थापित करने का विचार प्रस्तुत किया गया ताकि जीव को पुनर्जन्म से मुक्ति मिल सके। धार्मिक बाह्याडम्बरों को भी त्यागने का विचार उपनिषदीय विचारधारा की ही देन है।

WEBCOPY © JSTPPC NOT TO BE PUBLISHED

भक्ति आंदोलन के कारण

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के उद्भव एवं विकास में कई परिस्थितियाँ जिम्मेदार थीं। वैदिक रीति—रिवाज, पूजा—पाठ, धार्मिक—कर्मकाण्ड काफी महंगा हो गया था। पुरोहित वर्ग अपने लाभ के लिए वैदिक कर्मकाण्डों को काफी खर्चीला बना चुके थे। इन परिस्थितियों में सर्व—साधारण धार्मिक कार्यों में बढ़ते हुए खर्च का बोझ उठाने में असमर्थ था। दलितों एवं निम्न जाति के लोगों को समाज में छुआ—छूत एवं ऊँच—नीच के भेद—भाव के कारण शोषित एवं अपमानित होना पड़ता था। फलतः समाज के इस वर्ग के लिए एक ऐसे धर्म की आवश्यकता महसूस हुई जो सरल हो एवं समाज में समानता का उपदेश दे।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात इस्लाम धर्म के एकेश्वरवादी एवं समानतावादी सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार से भी सर्वसाधारण का इस धर्म के प्रति रुझान बढ़ा। इन परिस्थितियों में भक्ति संतों द्वारा हिन्दू–धर्म में आत्म सुधार के प्रयास शुरू हुए इसी क्रम में भक्ति आन्दोलन का जन्म हुआ।

दक्षिण भारत से भक्ति परम्परा की शुरुआत

अलवार एवं नयनार संत

प्रारंभिक मध्यकाल में (सातवीं से बारहवीं सदी के बीच) भक्ति आन्दोलन को आमलोगों तक पहुँचाने का श्रेय तमिल क्षेत्र (दक्षिण भारत) के अलवार एवं नयनार संतों को जाता है। इन्होंने आत्मा को पुनर्जन्म से मुक्ति के लिए ईश्वर के प्रति पूर्ण भक्ति एवं श्रद्धा पर बल दिया। नयनार एवं अलवार घुमक्कड़ संत थे जो गाँव–गाँव जाकर देवी–देवताओं की प्रशंसा में भजन कीर्तन करते थे। इन संतों का संबंध नीची जाति के लोगों से भी था। इन्होंने समाज के सभी लोगों को ईश्वर की भक्ति का संदेश दिया।

क्या आप जानना चाहेंगे ?

नयनार शैव (शिव की उपासना करनेवाले) एवं अलवर वैष्णव (विष्णु की उपासना करने वाले)संतों को कहा जाता था। कुल मिलाकर नयनार संतों की संख्या 63 थी जो समाज के विभिन्न वर्गों जैसे कुम्हार, अस्पृश्य कामगार, किसान, शिकारी, सैनिक, ब्राह्मण और मुखिया जैसी जातियों में पैदा हुए थे। अप्पार, सेबंदर, सुन्दरार, मणिक्कव सागार आदि सर्वाधिक प्रसिद्ध नयनार संत थे। इनके गीतों के संकलन को तेवरम् और तिरूवाचकम् कहा जाता था। अलवार संतों की संख्या 12 थी। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध परियअलवार,एवं उनकी पुत्री अंडाल आदि थी। इनके गीत दिव्य प्रबंधम् में संकलित हैं।

आमलोगों के साथ इन संतों का सीधा संबंध था। लोगों ने इनके सम्मान में मंदिरों का निर्माण किया तथा इनकी धार्मिक जीवनियाँ भी लिखी गईं। इन संतों के

द्वारा रचे गए गीतों में भगवान और भक्त के बीच भी सीधा संबंध स्थापित करने पर बल दिया गया जिससे समाज में समानता की प्रवृत्ति बढ़ी।

माणिक्कवसागार की कांस्य प्रतिमा

माणिक्कवसागार की रचना का एक अंशः–

मेरे हाड़मांस के इस घृणित पुतले में
तुम आए, जैसे यह कोई सोने का मंदिर हो,
मेरे कृपालु प्रभु, मेरे विशुद्धत्तम रत्न,
तुमने मुझे सांत्वना देकर बचा लिया।
तुमने मेरा दुख, मेरा जन्म–मृत्यु का कष्ट और माया–मोह
हर लिया और मुझे मुक्त कर दिया।
हे ब्रह्मानंद, हे प्रकाशमय, मैंने तुममें शरण ली है
और मैं तुमसे कभी दूर नहीं हो सकता।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

उपरोक्त कविता में कवि भगवान को क्या कहना चाहता है ?

शंकराचार्यः भक्ति के साथ दर्शन का मेल :

शंकराचार्य

भक्ति काल में ही महान् दार्शनिक शंकराचार्य का जन्म केरल में आठवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ। इन्होंने बताया कि हर जीव में परमात्मा का वास है। एक मात्र सत्य परमेश्वर (ब्रह्म) है बाकी सारा संसार झूठ हैं। शंकराचार्य ने संसार को झूठा (माया) मानकर और ब्रह्म को सत्य समझकर मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज्ञान–मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया। इन्होंने अपने दार्शनिक विचारों को संपूर्ण भारत में

प्रतिष्ठित किया एवं चारों दिशाओं में मठ की स्थापना की एवं संपूर्ण भारत में सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

शंकराचार्य ने ईश्वर के प्रति भक्ति के लिए अद्वैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इनके दर्शन का मूल है–"सिर्फ ब्रह्म ही सत्य है बाकि सारा संसार झूठा है। इसका कोई अस्तित्व नहीं है। इन्होंने ईश्वर (ब्रह्म) को सर्व शक्तिमान बताया तथा जीव में ईश्वर के वास को बताया। बिना ईश्वर के जीव का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

रामानुज

शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों मठ

उत्तर	–	बद्रीकाश्रम (उत्तराखंड)
दक्षिण	–	श्रृंगेरी (तमिलनाडु)
पूरब	–	पुरी (उड़ीसा)
पश्चिम	–	द्वारिका (गुजरात)

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

रामानुज

शंकराचार्य के दर्शन में कुछ विशेषताओं को जोड़ते हुए रामानुज ने ईश्वर को (परमात्मा) दया एवं अनुकम्पा का स्रोत माना। इन्होंने समाज के दलित वर्ग को भी ईश्वरीय आराधना के द्वारा भक्ति का संदेश दिया। इन्होंने मोक्ष प्राप्त करने का उपाय विष्णु के प्रति अनन्य भक्ति में देखा। रामानुज ने भक्ति की जो नई धारा प्रभावित किया उसने आगे चलकर उत्तर भारत में व्यापक रूप ग्रहण किया।

वासवन्ना का वीर शैववाद :

बारहवीं सदी के मध्य में वासवन्ना के नेतृत्व में दक्षिण भारत में वीरशैव आन्दोलन शुरू हुआ, जिसमें तमिल भक्ति आन्दोलन एवं मूर्त्तिपूजा (मंदिर) के विरुद्ध प्रतिक्रिया

दिखाई देती है। इन्होंने ब्रह्माणवादी विचारधारा के विरुद्ध निम्न जातियों एवं नारी के प्रति समतावादी विचार प्रस्तुत किया। इन्होंने कर्मकाण्डों एवं मूर्त्तिपूजा का भी विरोध किया।

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन :

रामानुज के विचारों का प्रभाव दक्षिण भारत से महाराष्ट्र तक फैला। महाराष्ट्र की वैष्णव भक्ति की धारा में 13वीं सदी के नामदेव से 17वीं सदी के तुकाराम तक भक्तों की एक समृद्ध परम्परा देखने को मिलती है। इन्होंने ईश्वर के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम के सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया। इन संतों ने धार्मिक आडम्बर, मूर्तिपूजा, तीर्थ, उपासना एवं कर्मकाण्डों का खण्डन (विरोध) किया। इन्होंने ऊँच–नीच के भेद–भाव का भी विरोध किया तथा अपने अनुयायियों में सभी जाति के लोगों, महिलाओं एवं मुसलमानों को शामिल किया।

महाराष्ट्र के सन्तों ने भक्ति की यह परम्परा पंढरपुर में विट्ठल स्वामी (विष्णु का एक रूप जो श्री कृष्ण के रूप में पूजा जाता था) को जन–जन के ईश्वर एवं आराध्य के रूप में स्थापित किया। इनकी रचनाओं को अभंग कहते हैं। इन भक्ति संतों की रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया। इन्होंने सभी वर्णों, जातियों यहाँ तक कि अंत्यजो को भी समान नजरिया से देखा।

महाराष्ट्र के भक्ति संतों के नाम – गणेश्वर, नामदेव एकनाथ, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, सक्कूबाई, खोखमेला का परिवार।

महाराष्ट्र के भक्ति सन्तों ने अपने अभंग द्वारा सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न खड़ा किया।

संत तुकाराम का अभंग (मराठी भक्ति गीत)

जो दीन–दुखियों, पीड़ितों को
अपना समझता है

© RSTBBC WEBBOOK NOT TO BE PUBLISHED

वही संत है
क्योंकि ईश्वर उसके साथ है।
वह हर एक परित्यक्त व्यक्ति को
अपने दिल से लगाए रखता है
वह एक दास के साथ भी
अपने पुत्र जैसा व्यवहार करता है।

तुकाराम का कहना है
मैं यह कहते–कहते
कभी नहीं थकूँगा
ऐसा व्यक्ति
स्वयं ईश्वर है

चोखमेला के पुत्र द्वारा रचित अभंगः–

तुमने हमें नीची जाति का बनाया
मेरे महाप्रभु, तुम स्वयं यह स्थिति स्वीकार करके तो देखो
हमें जीवनभर जूठन खानी पड़ती है
इसके लिए मेरे प्रभु तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

तुम तो हमारे घर में खा चुके हो
तुम इससे कैसे इंकार कर सकते हो ?
चोखा का बेटा (करमामेला) पूछता है

महाराष्ट्र के भक्ति संतों ने सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करते हुए किस तरह के विचार प्रस्तु किए?

उत्तर भारत में सामाजिक–धार्मिक परिवर्तन की बयार :

तेरहवीं सदी के बाद उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन की एक नई चेतना विकसित हुई। इस चेतना (सुधारवादी भक्ति आंदोलन) पर ब्राह्मणवादी हिन्दू–धर्म, इस्लाम, सूफी संतों एवं तत्कालीन धार्मिक सम्प्रदायों नाथपंथियों, सिद्धों तथा योगियों आदि के विचारधाराओं की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।

रामानुज की भक्ति परम्परा को उत्तर भारत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय रामानंद को जाता है। हिन्दी काव्य में एक उक्ति मिलती है कि

''भक्ति द्राविड़ उपजी लाए रामानंद।
प्रकट करी कबीर ने सप्तद्वीप नवखंड।।''

अर्थात जो भक्ति दक्षिण भारत में आरंभ हुई, उसे रामानंद ने उत्तर भारत में लाया तथा कबीर ने इसे प्रसारित किया। इन्होंने जातिवाद एवं भेद–भाव को अनुचित बताया तथा सभी जाति के लोगों को साथ–साथ खाने–पीने को भी स्वीकार किया। इनके शिष्यों में निम्न जाति के हिन्दू एवं मुसलमान भी थे। उन्होंने जात–पात के विरुद्ध काफी मुखर होते हुए कहा :

जात–पात पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै से हरि का होई।।

सगुण सम्प्रदाय–राम को विष्णु के मानवीय अवतार के रूप में स्वीकार किया।

निर्गुण सम्प्रदाय– ईश्वर की कल्पना निराकर ब्रह्म के रूप में की। इसने विभिन्न धर्मों के बीच मतभेद भुलाकर समाज में मानवीय धर्म की स्थापना का

प्रयास किया।

रामानंद रामभक्त सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक थे। इनके शिष्य दो वर्गों में विभक्त हो गए–सगुण एवं निर्गुण संप्रदाय। सगुण संप्रदाय के प्रमुख संत तुलसीदास थे जिन्होंने रामचरित मानस की रचना करके रामभक्ति की परम्परा को हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ऊँचाई पर पहुँचाया। इन्होंने एक आदर्श समाज की कल्पना की, जिसमें सभी जातियाँ अनुशासन एवं शांति से अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

मीराबाई

वैष्णव धर्म की परम्परा में एक प्रमुख शाखा कृष्ण भक्ति की थी जिसमें वासुदेव कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी आराधना पर बल दिया गया। इस परम्परा के प्रमुख संतों में मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य, सूरदास एवं रसखान आदि का नाम शामिल है।

मीराबाई का संबंध मेवाड़ एवं मारवाड़ के राजघरानों से था। ये बचपन से ही कृष्ण के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की भावना से प्रेरित थी। इन्होंने सुखमय जीवन त्यागकर परिवार के विरोध के बावजूद साधु संतों की संगति अपनाई एवं दलित वर्ग के रैदास की शिष्या बनी।

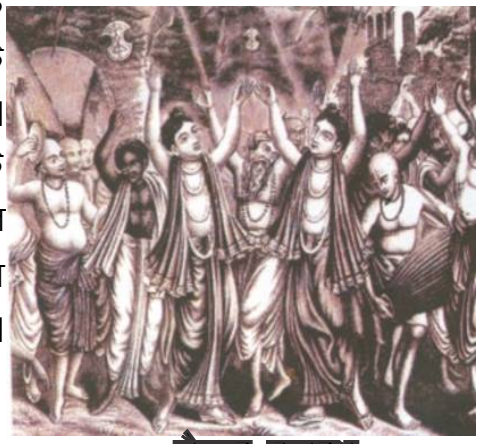

चैतन्य महाप्रभु

मीरा की भक्ति रचना का एक अंशः–
मेरो तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।।
साधु ढिग बैठ–बैठ, लोक–लाज खोई।

भगत देखी राजी भई, जगत देखी खोई।।

बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने शैशवावस्था में ही सन्यास ग्रहण कर वैष्णव धर्म का सरल और नैतिक रूप प्रस्तुत किया। इन्होंने भजन–कीर्तन, आत्मा की शुद्धता और ईश्वर के प्रति प्रेम को महत्व दिया। इनके अनुयायियों में हिन्दू मुसलमान, चाण्डाल ब्राह्मण सभी को शामिल किया गया।

भक्ति आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र

कृष्ण भक्ति परम्परा में सूरदास और रसखान ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से जन–जन त क अपनी पहुँच बनाई। जबकि ये धर्म प्रचारक नहीं थे किन्तु इनकी रचनाएँ सांस्कृतिक महत्व से पूर्ण हैं। सूर ने अपनी रचनाओं में कृष्ण के बाल रूप को महिमा प्रदान की है।

रामानंद के अनुयायियों का दूसरा वर्ग उदारवादी अथवा निर्गुण सम्प्रदाय कहलाता था। इन संतों ने ईश्वर की कल्पना निराकार रूप में की। इन्होंने जाति–पाति, ऊँच–नीच, कर्मकाण्ड एवं मूर्ति पूजा आदि का मुखर विरोध किया। इन संतों में प्रमुख थे–कबीर। कबीर इस्लाम और हिन्दू धर्म के उपदेशों से भली भाँति परिचित थे। कबीर के विचारों की जानकारी साखी एवं सबद में मिलते हैं।

कबीर के विचारों के संग्रह बीजक में हैं जिसके दो भाग–साखी एवं सबद है।

इनके कुछ भजन गुरुग्रंथ साहब एवं पंचवाणी में संकलित हैं। गुरुग्रंथ साहब का संकलन गुरु अर्जुनदेव ने किया।

कबीर दास

कबीर के उपदेशों में ब्राह्मणवादी हिन्दूधर्म और इस्लाम दोनों के आडम्बरपूर्ण पूजा के सभी रूपों पर कुठाराघात किया गया है। इनके द्वारा रचित पदों की भाषा बोलचाल की हिन्दी थी। कभी–कभी इन्होंने रहस्यमयी भाषा का भी प्रयोग किया जिसे समझना आसान नहीं था।

कबीर के कुछ क्रांतिकारी दोहे :–

1. **पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।**
   ताते ये चक्की भली, पीसि खाए संसार।।
2. **पोथि पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।**
   ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।
3. **गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।**
   बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविन्द दिये बताय।
4. **कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाए।**
   ता चढि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा भया खुदाय।।

गुरुनानक

कबीर रामानन्द के शिष्य थे तथा राम नाम के जप में विश्वास करते थे। परन्तु इनके राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र नहीं थे। इन्होंने

अपने राम को इस रूप में बताया–

दसरथ के गृह ब्रह्म न जनमें।

ई छल माया कीन्हा।

ये दशरथ पुत्र राम को विष्णु का अवतार भी नहीं मानते थेः–

''चारि भुजा के भजन में भूल पड़ा संसार।

कबिरा, सुमिरे ताहि को जाकि भुजा अपार।।

गुरुनानक

कबीर के समकालीन गुरु नानक ने भी अन्य भक्ति संतों की तरह ही सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों का विरोध किया। इन्होंने इस्लाम और हिन्दू धर्म दोनों की शिक्षाओं को ग्रहण किया। इन्होंने सर्वशक्तिमान ईश्वर की आराधना का संदेश दिया। इन्होंने आपसी सहयोग एवं अन्तरजातीय विवाह पर भी बल दिया। इनके उपदेश आदि ग्रंथ में संकलित हैं। इनके अनुयायी सिख धर्मावलम्बी कहलाए।

बिहार के संत दरिया साहेब

जब भारतीय स्तर पर सांस्कृतिक मेल–जोल की परम्परा कमजोर हो रही थी, उसी समय क्षेत्रीय स्तरपर धार्मिक सामंजस्य की परम्परा प्रबल हुई जिसे बिहार में दरियापंथ के उदय के रूप में देखा जा सकता है। दरियापंथ के प्रवर्तक दरिया साहब को उनके अनुयायियों द्वारा कबीर का अवतार भी माना जाता है। ये कबीर की तरह ही एक समन्वयवादी चिन्तक थे।

दरिया साहेब के विचारों में एकेश्वरवादी भावना थी। इनके अनुसार ईश्वर सर्वव्यापी है तथा वेद और कुरान दोनों में ही उसका प्रकाश है। ईश्वर को दरिया साहब ने निर्गुण और निराकार माना। इन्होंने अवतार–पूजा का खण्डन किया। इन्होंने केवल प्रेम, भक्ति और ज्ञान को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन माना। इनके अनुसार प्रेम के बिना भक्ति संभव नहीं है और भक्ति के बिना ज्ञान अधुरा है। इनका कहना है कि ईश्वर के प्रति प्रेम, पाप से बचाता है और ईश्वर की अनुभूति में सहायक होता है। इनके अनसार ज्ञान पस्तकों में नहीं बल्कि चेतना में निहित है जबकि विश्वास ईश्वर

की इच्छा के प्रति समर्पण मात्र है। दरिया साहब ने जाति प्रथा, छुआ–छूत आदि का विरोध किया। इनके विचारों पर इस्लाम का एवं व्यवहारिक पहलुओं पर निर्गुण भक्ति का प्रभाव दिखाई देता है। इनके अनुयायियों में दलित वर्ग की संख्या ज्यादा थी।

दरिया साहेब के विचार बिहार के पश्चिमी हिस्से, जो आज के आरा, बक्सर, रोहतास, भभुआ जिले हैं में काफी लोकप्रिय थे। इन्होंने शाहाबाद के इलाके में मठ की भी स्थापना की। इनका प्रभाव वाराणसी तक था।

दरिया साहेब के उपदेशों के कुछ अंश :–

''एक ब्रह्म सकल घट वासी; वेदा कितेबा दुनो परणासी''।

'ब्रह्म, विसुन, महेश्वर देवा, सभा मिली करहिन ज्योति के सेवा'।

तीन लोक से बाहरे सो सद्गुरु का देश'।

तीर्थ, बस्त, भक्ति, बिनु फीका तथा पड़ही पाखण्ड पथल का पूजा।

सूफीवाद :

मिली–जुली संस्कृति का सर्वाधिक प्रभाव सूफीवाद के विकास में देखने को मिलता है। भक्ति संतों और सूफियों में काफी समानताएँ थीं। दोनों के बीच लगातार वैचारिक आदान–प्रदान होते रहे। सूफी रहस्यवादी संत थे, जिन्होंने बाहरी आडम्बर को अस्वीकार करके ईश्वर के प्रति प्रेम एवं भक्ति तथा मनुष्यों के प्रति दया भाव दिखाने पर बल दिया।

सूफियों द्वारा सभा के आयोजन का चित्र

रहस्यवाद–रहस्यवाद वह भावना है जो मानव को ईश्वर–संबंधी रहस्यों को जानने के लिए प्रेरित करती है। सूफीवाद एक ऐसा प्रयास है जिसके तहत व्यक्ति (संत) अपने अन्दर अल्लाह की

उपस्थिति को महसूस करता है और बिना किसी भेद–भाव के ईश्वर की समस्त रचना से प्रेम करता है।

इन्होंने इस्लाम में मूर्तिपूजा को अस्वीकार करके एकेश्वरवाद यानि सिर्फ अल्लाह के प्रति समर्पण का दृढ़ता से प्रचार किया। इस्लाम ने शरियत (धार्मिक कानून) एवं नमाज को प्रधानता दी, जबकि सूफी ईश्वर के साथ किसी की परवाह किए बगैर उसी तरह जुड़े रहना चाहते थे जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका से। अल्लाह की आराधना में मस्त सूफी संत गीतों की रचना करके गाया करते थे। ये पीर या औलिया (गुरु)की देखरेख में समा (गाना) ज़िक्र (नाम का जाप) एवं चिन्तन आदि किया करते थे।

फुलवारी खानकाह

वैसे तो सूफीवाद के विकास के कई किस्से हैं लेकिन इसकी शुरुआत मध्य एशिया से मानी जाती है। यहाँ के सूफी संतों में ग़ज़ाली, रूमी, सादी एवं राबिया आदि का नाम उल्लेखनीय है।

भारत में सबसे पहले सूफी खानकाह की स्थापना का श्रेय सुहरवर्दी सिलसिले के संत बहाउद्दीन जकरिया को है। सुहरवर्दी उपवास एवं आत्मदमन में विश्वास नहीं करते थे। इन्हें धन एवं राजनीति से कोई परहेज नहीं था। इन संतों ने राजकीय सहयोग से सुखमय जीवन व्यतीत किया एवं धर्मान्तरण को बढ़ावा दिया।

खानकाह – सूफी संतों द्वारा जहाँ इस्लाम एवं रहस्यवादी चिन्तन की शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसमें सभी वर्ग के लोग शिक्षा ग्रहण करते

थे। गुरु को पीर एवं शिष्य को मुरीद कहा जाता था।

फुलवारी शरीफ खानकाह – फुलवारी शरीफ खनकाह मध्यकालीन शिक्षा जगत का एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ दूर–दूर से विद्यार्थी अरबी एवं फारसी की शिक्षा लेने आते थे। यहाँ पीरी–मुरीदी परम्परा का अनोखे ढंग से निर्वाह किया जाता था। इस खानकाह की लाइब्रेरी मध्यकालीन साहित्यिक कृतियों एवं पाण्डुलिपियों के कारण काफी समृद्ध मानी जाती है। इस लाइब्रेरी की खासियत यह है कि यहाँ मुगल बादशाह औरंगजेब द्वारा लिखित कुरान की प्रति सुरक्षित है। इसी खनकाह में अरबी एवं फारसी भाषाओं की जानकारी प्राप्त करने राजाराम मोहन राय आए थे।

इस खानकाह की लाइब्रेरी लगभग 400 वर्ष पुरानी है। इसमें लगभग 4 हजार पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। इस लाइब्रेरी में चीनी मिट्टी पर कुरान की आयतें लिखी हुई हैं। यहाँ लगभग 20 हजार इस्लामी एवं फारसी साहित्य पर पुस्तकें उपलब्ध हैं। यह खानकाह आज भी इस्लामी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। आज भी यहाँ देश–विदेश के शोधार्थी आते रहते हैं।

e[kne ;fg;k eujh dh njxkg

भारत का सबसे लोकप्रिय सिलसिला चिश्ती था जिसकी स्थापना अजमेरशरीफ में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के द्वारा की गई थी। मुईनुद्दीन के शिष्यों में राजस्थान के हमीदुद्दीन नागौरी, दिल्ली के बख्तियार काकी, ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, पंजाब के बाबा फरीद एवं गुलबर्ग के बन्दानवाज गेसुदराज का काफी सम्मान था। चिश्ती सिलसिले

को लोकप्रिय बनाने का श्रेय निजामुद्दीन औलिया को जाता है।

चिश्ती संत, सुहरवर्दी संतों के विपरीत सादगी, निर्धनता एवं एकान्तवास में विश्वास करते थे। इन्हें राजकीय सहयोग एवं सुख–सुविधा की कोई आवश्यकता नहीं थी। इन्होंने धर्मान्तरण में कोई रूची नहीं ली। इनके दरवाजे सभी धर्म के लोगों के लिए खुले रहते थे। चिश्ती संत कठोर तप में विश्वास करते थे।

आगे चलकर भारत में कई सिलसिलों की स्थापना हुई, जिसमें कादरी, नक्शबंदी, शुत्तारी एवं बिहार में फिरदौसी का विशेष महत्व है। बिहार में फिरदौसी सिलसिले के संतों में हजरत मखदूम शराफुद्दीन यहिया मनेरी का विशेष महत्व है।

हजरत मखदूम शरफुद्दीन यहिया मनेरी

भारत में मिली–जुली संस्कृति की जो पवित्र धारा सूफी संतों ने बहायी उसका आज भी विशेष महत्व है। इस संस्कृति को बिहार में मजबूत करने का कार्य मनेरी साहब ने किया। इन्होंने संकीर्ण विचारधारा का न केवल विरोध बल्कि जाति–पाति एवं धार्मिक कट्टरता की जगह समन्वयवादी संस्कृति के निर्माण का सक्रिय प्रयास किया। इनके प्रयास से फिरदौसी सिलसिले को बिहार में काफी लोकप्रियता मिली। मनेरी साहब ने मनेर से सुनार गाँव (बाँग्लादेश) तक यात्रा की एवं ज्ञानार्जन किया। इसके बाद ये राजगीर एवं बिहारशरीफ में तपस्या एवं धर्म प्रचार में लीन रहे। फारसी भाषा में उनके पत्रों के दो संकलन मकतुबाते सदी एवं मकतुबात दो सदी प्रमुख हैं।

इनकी कुछ हिन्दी रचनाओं के अंश इस प्रकार है :–

शर्फागोर डरावन, किस अधियारी रात बरना पूछे कोई, कौन तुम्हारी जात। हिरदा में देखलु बहार सांवर गोरियो, बेरी–बेरी कर है सिंगार

पुकार सावर गोरियो ।खूब हेयात आज होरी रचेगी ।।

क्या आप जानते हैं?

बिहारशरीफ में मनेरी साहब का मजार(दरगाह) है। इनके बगल में उनकी माँ रजिया का मजार है। बीबी रजिया सूफी संत पीर जगजोत की बेटी थी।

अभ्यास

1. आइए, याद करें :–

1. सिंध विजय किसने की ?

(क) मुहम्मद–बिन–तुगलक (ख) मुहम्मद बिन कासिम

(ग) जलालुद्दीन अकबर (घ) फिरोजशाह तुगलक

2. महमूद गजनी के साथ कौन–सा विद्वान भारत आया?

(क) अल–बहार (ख) अल जवाहिरी

(ग) अल–बेरूनी (घ) मिनहज उस सिराज

3. भारत में कुर्ता–पायजामा का प्रचलन किनके आगमन से शुरू हुआ?

(क) इसाई (ख) मुसलमान

(ग) पारसी (घ) यहूदी

4. अलवार और नयनार कहाँ के भक्ति संत थे?

(क) उत्तर भारत (ख) पूर्वी भारत

(ग) महाराष्ट्र (घ) दक्षिण भारत

5. मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह कहाँ है?

(क) दिल्ली (ख) ढाका

(ग) अजमेर (घ) आगरा

2. इन्हें सुमेलित करें :–

(क) निजामुद्दीन औलिया	(1) बिहार
(ख) शंकर देव	(2) दिल्ली
(ग) नानकदेव	(3) असम
(घ) एकनाथ	(4) राजस्थान
(ङ) मीराबाई	(5) महाराष्ट्र
(च) संत दरिया साहब	(6) पंजाब

3. आइए समझकर विचार करें :– 200 शब्दों में उत्तर दें।

(1) भारत में मिली–जुली संस्कृति का विकास कैसे हुआ?प्रकाश डालें।

(2) निर्गुण भक्ति संतों की भारत में एक समृद्ध परम्परा रही है। कैसे?

(3) बिहार के संत दरिया साहेब के बारे में आप क्या जानते हैं?लिखें।

(4) मनेरी साहब बिहार के महान सूफी संत थे। कैसे?

(5) महाराष्ट्र के भक्ति संतों की क्या विशेषता थी।

4. क्रियाशील बनें :–